BABA HEERA SINGH DEEPA SINGH JEE

PRIMARY TEACHERS TRAINING COLLEGE

AFFILIATED TO MMHP UNIVERSITY, PATNA
& BSEB, PATNA)

Kothuan, Agion Bazar, Piro, Bhojpur, Bihar

COURSES : B.Ed., D.El.Ed.

DR. MADHESHWAR SINGH
FOUNDER CHAIRMAN

Newsletter

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।।

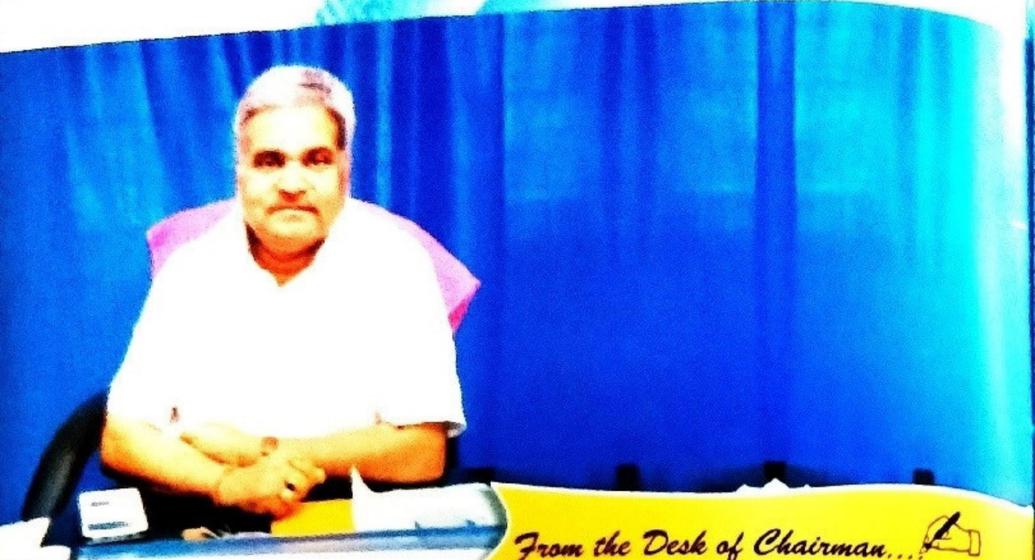

From the Desk of Chairman...

Education is a continuous & creative process. Its aim is to develop the capacities latent in human nature and to coordinate their expression for the enrichment and progress of the society by equipping children with spiritual, moral and material knowledge.

The so-called T. T. College education in the country is still deeply rooted in our colonial past and needs to be re-oriented to reflect our national ethos and National sentiments adequately.

The society's requirement should be linked up with an individual's ability & expertise. Sensitizing the student to such values would have to be an essential component or college education. What is required by our nation today is a healthy blend of modern scientific thinking with traditional values.

"The roots of education are bitter but the fruits are sweet."

Let us be more far sighted, responsible and enriching in our planning. And let the students yield the rich harvest of today and tomorrow as well; which will truly be a step to make our India a great and a powerful country.

With best wishes.

Dr. Madheshwar Singh
Founder Chairman

OUR VISION

TO BUILD AN EGALITARIAN SOCIETY BASED ON JUSTICE FREEDOM AND HARMONY THROUGH OUR TEACHER TRAINERS EXTENSION SERVICE AND RESEARCH

अपने शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों, विस्तार-सेवा तथा शोध कर्ताओं के माध्यम से न्याय, स्वतंत्रता और सामंजस्य पर आधारित समतावादी का निर्माण करना।

MISSION

TO TRAIN WELL-MOTIVATED TEACHERS, WHO WILL BE INTELLECTUALLY COMPETENT, MORALLY UPRIGHT, SOCIALLY COMMITED AND SPIRITUALLY INSPIRED, IN ORDER TO BECOME INSTRUMENTS OF SOCIAL TRANSFORMATION AND TO FIND NEW WAYS AND MEANS TO TEACHING- LEARNING PROCESS.

ऐसे प्रेरित और समर्पित शिक्षक-शिक्षिकाओं को तैयार करना जो बौद्धिक रूप से प्रतिबद्ध हो, जो सामाजिक परिवर्तन के लिए माध्यम बनें और अध्ययन-अध्यापन के नये तौर-तरीकों की खोज करें।

AND PROMISE

We at our College, aspire to establish a system of quality assurance which would on the continuous basis evaluate and monitor the quality of education and training imparted at college, improve the teaching learning process and ultimately the college a centre of excellence. In today's competitive world of education, what brand a college 'Excellent' is certainly the results.

An achiever college one whose result will be excellent, where the parents have full faith in its staff, strategies and systems. As the students leave the portals of their college with a fantastic result in their hand, they certainly see the world through rose-tinted glasses.

Indeed, it's the College that plays-a crucial role in moulding their lives towards a better future. We must facilitate that our students experience the joy, the confidence and the pride of being an ACHIEVER'!

AIMS AND OBJECTIVES

1. The Trust has been established to work for the Educational, Social, Cultural, Medical and Economic upliftment and all other sections of the Society in general irrespective of caste and creed.
2. The object of the Trust will be to impart secular education to boys and girls through English and Hindi Medium.
3. Our objective will be to promote the total development of the person so as to be fully human, full Indian and truly modern.
4. The Trust will aim at the integral and personal formation of the young. To accomplish this special efforts will be made.
   - (a) To help students of all sections of the society (poor, backward, Scheduled Castes and Scheduled Tribes) to become mature and spiritually men and women of character.
   - (b) To encourage them continually to strive excellence in every field of life.
   - (c) The trust will promote and undertake programs for moral and mental development of youth through Yoga, Creative Art and other suitable means.
5. The Trust aims at making its own contributions towards a radical transformations of present day social equality of opportunity, genuine freedom and respect for religious and moral values enshrined in the Indian Constitution
6. The Trust organise conferences, symposiums for students as well as for the teachers, for the better understanding of the subject matter concerning basic health, mental and spiritual development of the society.
7. The Trust will educate the people for the eradication of social evils like dowry system, child labour, early marriage and drug addiction.
8. The Trust will work for the national goals of education and it will also promote emotional integration in the student and by interesting feelings of partition, cultural heritage and spirit of tolerance, so that communal or caste interest would be submerged in the larger interests of the nation.
9. The Trust will aim at the teaching of moral and spiritual values in the students. The students will thus learn to discern the spiritual meaning of their life situations and through that they will deepen their authentic communion with God.
10. The Trust will open and maintain libraries, reading rooms, common rooms, science laboratories for the benefit and convenience of students and staff members.
11. The Trust will establish Computer Education Centres for the benefit of students and the members of the society.
12. The Trust will work for the national integration and unity of the country.
13. The Trust will start education of Fine Arts.
14. The Trust will spread knowledge and information to all sections of the society through newspapers, pamphlets, hand bills and publication of articles in the newspapers.
15. The Trust will volunteer relief work during natural calamities as well as national emergencies such as flood, fire and war.
16. The Trust will work to educate people and creating awareness against health hazards like polio, malaria, diarrhoea, and other infectious diseases.

कुलगीत

सु-चेतना का दीप बने, बने ज्ञान का हिमालय
हमारा महाविद्यालय, हमारा महाविद्यालय.......

सत्य, शील, सुचिता को, आओ मशाल उठाएं।
सेवा, सदाचार, प्रेम से, जग में आलोक फैलाएं।।
कर्मवीर बाज सिंह-सा हम भी, नए प्रतिमान बने,
आओ मिलकर प्रण करें, सद्भाव अपनाएं।।

दादी राधिका का दीप बने, बने विश्व का प्रकाशालाय।
हमारा महाविद्यालय, हमारा महाविद्यालय.......

सृजन की तीव्र उत्कंठा, जहाँ सभी में सुज्ञान जगाएं।
दिव्य वातावरण में पोषित हम, तम-अज्ञान मिटाएं।।
शोभी गंगा, शिव-रामदिहल सम, पथ अन्वेषी बने,
सत्य, अहिंसा, त्याग, मैत्री की, अविनाशी मशाल जलाएँ।।

प्रगति-सोपान का उदगम बने, बने विवेक का शीर्षालाय।
हमारा महाविद्यालय, हमारा महाविद्यालय.......

आत्म निर्भर उद्यमी, शिक्षित भारत मिलकर बनाएँ।
सिद्धपुर नालंदा-तक्षशिला सम, जग में क्रांति लाएँ।।
राम कुमार-उदित, हीरा-दीपा सिंह जैसे कुल का अभिमान बने,
ज्ञान पिपासु शिष्य वृन्द सम, तपो सधाना को अपनाएँ।।

जयराज भविष्य की अव्य संभावनाएं बने, बने सुबोध श्रेष्ठता का शिक्षालय
हमारा महाविद्यालय, हमारा महाविद्यालय.......

परिवार सम सुसंस्कृति की, थाती यहाँ सब अपनाएँ।
सुव्यवस्था, ज्ञान-गुणवत्ता व तुष्टि की गाथा गुनगुनाए।।
रामचंद्र-अवधेश अस सुरेन्द्र-योगेन्द्र, विमल जस शनि शांतिदूत बने,
महावीर, बुद्ध, राहुल और राजेंद्र की अवनि में, हम नूतन बिहार बसाएं।।

रौशन संस्कारों का कल्पवृक्ष बने, बने निर्माणों का सृजनालय।
हमारा महाविद्यालय, हमारा महाविद्यालय.......

वीर कुंवर सिंह की मिट्टी पर, हम ज्ञान उपवन महकाएँ।
जन-उत्थान व स्नेह-संरक्षण, जिसकी आभा कहलाएँ।।
श्री मधेश्वर, सतेंद्र, पशुपति, अंबर प्रकाश सम, कुलभूषण बने
माँ बागेश्वरी की कृपार्थ, जग में सुनाम यश फैलाएँ।।

रमन सु-चेतना का दीप बने, बने ज्ञान का हिमालय।
हमारा महाविद्यालय, हमारा महाविद्यालय.......

– सहायक प्राध्यापक

विजन–2030

महाविद्यालय सन् 2030 तक के लिए शिक्षा, छात्र-छात्रा, शिक्षक एवं समाज को दृष्टिगत करते हुए एक लोक दृष्टि प्रस्तुत करता है। इसके आलोक में महाविद्यालय आगे बढ़ने का संकल्प व्यक्त करता है।

आज हम भूमण्डलीकरण, उदारीकरण एवं बाजारवाद के युग में हैं। उपभोक्तावाद के कारण अपसंस्कृति के शिकार हैं। शिक्षा का अवमूल्यन हो रहा है। सब कुछ भौतिकता से प्रभावित है। मानव साध्य नहीं मात्र साधन बनता जा रहा है। मानव-मूल्य, मानवीय मूल्य एवं नैतिकता पूर्ण जीवन मूल्य तिरोहित हो रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि मानविकी शिक्षा की अब आवश्यकता नहीं है। सब कुछ भौतिक, आर्थिक, उपभोग जैसा परिदृश्य है। ऐसे में हम मानव की अस्मिता एवं गरिमा पर ओर देने के पक्षधर हैं, किन्तु दोनों की अस्मिता को समझकर उस आधुनिकता की ओर अग्रसर होना चाहते हैं। इसके लिए हम सर्वहित शिक्षा को ध्यान में रखते हुए दलितों, पिछड़ों और स्त्रियों की शिक्षा पर विशेष बल देंगे। इनके लिए छात्रावास, छात्रवृत्ति, शुल्क मुक्ति की सुविधा के साथ-साथ परिसर में प्रतियोगिता, कोचिंग और रोजगार के हुनर की प्रशिक्षण सुविधा उपलब्ध करेंगे, ताकि वे भविष्य की चुनौतियों का सामना कर सकें। साथ ही हम शिक्षा में भारतीय संस्कृति एवं नैतिक मूल्यों को भी जोड़ने की तरफ अग्रसर हैं।

भावी कॉलेज कैसा हो, इसके भविष्य की रूपरेखा और कल्पनाएँ जेहन में तिरोहित की गई है। परम्परागत और आधुनिक शिक्षा दोनों का समन्वय कर हम सर्वोत्तम समझते हैं। हम अधिकाधिक अपने युवा शक्ति का उत्थान एवं सदुपयोग करना चाहेंगे। उन्हें उद्यमशील एवं रोजगारोन्मुख शिक्षा में अग्रसर करना चाहेंगे, किन्तु मूल्य आधारित ज्ञानमूलक शिक्षा को भी बनाये रखना हमारा उद्देश्य होगा।

रचनात्मक समझ और उपस्थित चुनौतियों का सामना करने योग्य युवा शक्ति (छात्र शक्ति) तैयार करना हमारा परम उद्देश्य है। वस्तुतः छात्र जीवन, बौद्धिक, नैतिक, रचनात्मक विकास एवं विस्तार का समय होता है, इसलिए उसे विज्ञान, साहित्य, इतिहास पढ़ाया जाता है। दरअसल, छात्र जीवन को वह काल खण्ड है जिसमें असफल व्यक्ति, बाद के जीवन में अपनी सारी दृश्य सफलताओं के बावजूद अधूरी जिन्दगी जीता है और अपनी सफलताओं के लिए समस्त को हानि पहुँचाता है। वही सामाजिक समस्या बनता है। इसलिए हमारा यह निरन्तर प्रयास है, और रहेगा कि कॉलेज की छात्र-छात्राएँ अपने भावी जीवन में संघर्ष के योग्य बने। समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में रचनात्मक भूमिका अदा करें, इसलिए हम भविष्य में राष्ट्रीय सेवा योजना एवं राष्ट्रीय कैडेट कोर तथा स्काउट्स एण्ड गाइड्स की इकाइयाँ स्थापित करेंगे। खेल-कूद की संस्कृति को स्थापित करेंगे एवं व्यापक बनायेंगे। अन्य विविध पाठ्येतर कार्यक्रम चलाएंगे और उन्हें रचनात्मक क्षितिज प्रदान करेंगे। व्याख्यान कक्षा की परम्परागत शिक्षण के साथ-साथ आधुनिक तकनीक के प्रयोग का लाभ देंगे। श्रव्य एवं दृश्य माध्यमों, विश्वज्ञान जैसे 'इंटरनेट' माध्यमों से उन्हें जोड़ेंगे। छात्र/छात्राओं में शिक्षा की भूख, ज्ञान की प्यास, जिज्ञासा पैदा करेंगे। हम ज्ञान रूपी प्रकाश को भरने के साथ उनके भीतर के अज्ञान रूपी अन्धकार (तम) को दूर कर उनके अन्दर के प्रकाश को जाग्रत एवं व्याप्त करेंगे। हमारे छात्र/छात्रा हमारी शक्ति बने, यह हमारी मनोकामना रहेगी।

लोकतन्त्र का आग्रह है कि प्रबन्धन, शिक्षक में पारदर्शिता हो, अधिकाधिक सहभागिता हो। छात्र, शिक्षक, अभिभावक, प्रशासन एवं प्रबन्धन में निरन्तर संवाद या तारतम्यता बनी रहे इससे वर्चस्ववादी प्रवृति का शमन होता है। हम भविष्य में शिक्षक–समुदाय के 'एटीट्यूड' और 'एप्टिट्यूड' में अपेक्षित परिवर्तन का प्रयास करेंगे। नीतिगत हस्तक्षेप तथा रचनात्मक बाध्यताओं के माध्यम से उन्हें अनुशासित एवं उद्देश्यनिष्ठ बनाने का प्रयास करेंगे।

(क) संस्था के प्रति शिक्षकों का रुझान बना रहे अतः हमारा प्रयास होगा कि प्रत्येक शिक्षक एक निश्चित अवधि तक उपस्थित होकर आवश्यकतानुसार प्रशासन में सहयोग दें।

(ख) हम चाहेंगे कि संस्था में शिक्षक को शिक्षण सम्बन्धी अतिरिक्त कार्य उनकी रुचि, क्षमता एवं योग्यता को ध्यान में रखते हुए दिए जाएँ।

(ङ) हमारा प्रयास होगा आत्म मूल्यांकन योजना (Self appraisal scheme) प्रभावकारी ढंग से लागू हो जिससे शिक्षक अपना आकलन स्वयं कर सकें। इससे नैतिक संवेदना विकसित होगी।

(च) हमारा प्रयास होगा कि हमारे शिक्षक बौद्धिक मूल्यों के संरक्षण, संस्कृति की भूमिका में रहें। वह स्वयं और अपने छात्रों में वैज्ञानिक चिंतन पद्धति विकसित करें और सोच में विश्लेषणात्मक पद्धति अपनायें। एक स्वस्थ आलोचना संस्कृति के निर्माण में यथासंभव योगदान करें। आत्म केंद्रित विषयों से हटकर वह अर्जित ज्ञान, अनुभव एवं तर्क के आधार पर विवेचना करें।

(छ) इस समय, छात्र एवं शिक्षक, शिक्षातंत्र की धुरी है और शेष इस तंत्र के अनुषंगी पुर्जे। शिक्षण कार्य का सरोकार शिक्षक-छात्र से है, इसलिए शिक्षा व्यवस्था में सार्थक एवं कारगर हस्तक्षेप की आवश्यकता है। आज का शिक्षक तकनीकी दृष्टि से ही शिक्षक है। शिक्षा परिसर उद्देश्यहीन एवं अशान्त है, क्योंकि शिक्षा अपनी उपयोगिता और शिक्षक अपनी गरिमा एवं दायित्व बोध खो चुके हैं। दायित्व मुक्त होकर अन्य लोगों के दायित्व की चर्चा करना बेमानी है। अतः हम अपने शिक्षकों में दायित्व बोध जागृत करने का प्रयास करेंगे। हमारी धारणा है कि उच्च शिक्षा से जुड़े शिक्षक को निष्ठावान शिक्षक होने के साथ-साथ अपनी भाषा, आचरण, ज्ञान एवं समझ बूझ के रास्ते से ही अपनी सार्थकता की तलाश करनी चाहिए।

साम्प्रदायिकता एवं जातिवाद तथा छात्राओं के शिक्षा के प्रति संकीर्णता हमारे समाज का कोढ़ है। इससे बचने के लिए हमने छात्र-छात्राओं से संवाद स्थापित करना आरम्भ कर दिया है। हम सभी वर्ग, समुदाय के बच्चों को शिक्षक प्रशिक्षु, कम्प्यूटर की शिक्षा की ओर उन्मुख होने के प्रति प्रतिबद्ध है। धर्म जाति के घरौंदे से निकल कर ही वे ज्ञानार्जन योग्य बन सकते हैं तथा वैज्ञानिक सोच बना सकते हैं। हमने अपने प्रबुद्ध शिक्षकों के सहयोग से अपनी राह बना ली है। हमने प्रगति और विकास का रास्ता चुन लिया है। हमने समाज और अपनी संस्था के वृहद हित को चुना है। हमारी प्राथमिकता इस पिछड़े क्षेत्र को सुनिश्चित एवं संस्कारवान बनाना है। हम 2030 तक और आगे भी शिक्षा के क्षेत्र में अपनी सीमा में बेहतर बनाने का प्रयास करेंगे।

ज्ञातव्य है कि सरकारी नौकरियाँ कम हो रही है निजीकरण बढ़ रहा है ऐसे में हमारा प्रयास होगा कि आज की युवा शक्ति रोजगार में लगे। स्वरोजगार के प्रति चेतना विकसित करेंगे। इस दिशा में राष्ट्रीय सेवा योजना के शिविरों एवं स्काउट्स एण्ड गाइड्स के माध्यम से छात्र/छात्राओं को प्रेरित करेंगे।

इस प्रकार हमारा प्रयास सर्वांगीण उन्नयन की ओर है। हम छात्र/छात्राओं के माध्यम से और जनता के बीच जाकर समाज के एवं अपने राष्ट्र के सम्यक् विकास के आकांक्षी है।

प्रस्तुति : महाविद्यालय

कक्षा एवं विषय संबंधी सूचनाएँ

1. बी. एड
2. डी. एल. एड.

नोट :- D. EL. Ed का शुल्क माननीय उच्च न्यायलय पटना के आदेशानुसार रु 1,50,000 है। परन्तु संस्था के अध्यक्ष द्वारा शुल्क में कटौती करते हुए रु 1, 10,000 रखा गया है। यदि कोई छात्र / छात्रा असहाय एवं आर्थिक रूप से पिछड़ा हो संस्था के अध्यक्ष द्वारा शुल्क में छूट देने के लिय अधिकृत है।

आवश्यक निर्देश

1. ड्रेस कोड के बिना परिसर में प्रवेश वर्जित है।
2. आवेदन-पत्र को भली- भाँति पढ़कर ही भरा जाय। त्रुटियों के लिए अभ्यर्थी स्वयं जिम्मेवार होगें।
3. आवेदन- पत्र पर अद्यतन फोटो अवश्य चिपकायें।
4. अभ्यर्थी विषय सम्बन्धी प्रविष्टि सावधानीपूर्वक भरें। त्रुटियो के लिए अभ्यर्थी स्वयं जिम्मेवार होंगे।
5. सभी प्रमाण-पत्रों की स्व-प्रमाणित छायाप्रति अवश्य लगावे।
6. प्रवेश के समय अभ्यर्थी को स्थानान्तरण। प्रविजन-प्रमाण-प्रत्र की मूल प्रति जमा करना अनिवार्य है।
7. किसी भी स्थिति में जमा शुल्क वापस नहीं होगा। अत प्रवेश से पूर्व विषय चयन को सुनिश्चित करना अभ्यर्थी के हित में है।
8. नामांकन से पूर्व आवेदन पत्र पर प्राचार्य/ नामांकन प्रभारी की अनुशंसा अनिवार्य है।
9. आवेदन-पत्र क्रय करने के पश्चात वापस नहीं होगा।
10. विश्वविद्यालय में पंजीयन हेतु पंजीयन फीस के साथ पंजीयन फार्म अवश्य भरा जाए।
11. नामांकन हेतु प्रथम आवेदन-पत्र जमा करना होगा। मेरिट पर विषय अनुसार आवंटित किया जायेगा।

पठन पाठन

शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय में नियमित रूप से कक्षायें संचालित होगा। जिसकी उपस्थिती 80 प्रतिशत अनिवार्य है। इसके साथ हीं उपचारात्मक एवं निदानात्मक कलाएँ तथा S. TET / C. TET प्रतियोगी परिक्षाओं की तैयारी भी कराई जाएगी।

पाठ्येत्तर गतिविधियाँ

पठन-पाठन के अतिरिक्त आर्ट एण्ड क्राफ्ट लैब तथा खेलकूद एवं समय-समय पर जिम लैब में भी छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं को भेजा जायेगा।

कॉलेज में खेल-कूद की समुचित व्यवस्था है। प्रतिवर्ष कॉलेज वार्षिक-खेलकूद-महोत्सव का आयोजन करता है। साथ ही विश्वविद्यालय एवं बिहार सरकार के निर्देश पर राष्ट्रीय महत्व के खेलकूद भी इसके खेल-परिसर में आयोजित होते हैं।

अत: अच्छे खिलाड़ियों के लिए यहाँ विशेष-अवसर उपलब्ध है। विश्वविधालय एवं अन्य गणमान्य राष्ट्रीय संस्थाओं के सहयाग एवं अनुदान पर कॉलेज में प्रतिवर्ष सेमिनार, संगोष्ठी, कार्यशाला, शैक्षिक एवं सामाजिक कार्यशाला, वाद-विवाद एवं लेख-प्रतियोगिता, संगीत एवं अन्य ललित कलाओं की प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र एवं अन्य पुरस्कार भी प्रदान किया जाता है।

आचरण सम्बन्धी नियम

(प्रशिक्षु शिक्षक के लिए)

1. प्रतिदिन बिना ड्रेस कोड के परिसर में प्रवेश निषिद्ध है।
2. कक्षा में समय से उपपस्थित होना अनिवार्य है। विलम्ब से आने और पहले कक्षा छोड़ने पर प्रशिक्षु शिक्षक उस वर्ग से अनुपस्थित माना जाएगा।
3. सम्पूर्ण कार्य दिवस का 75 प्रतिशत उपस्थिति न होने पर प्रशिक्षु शिक्षक परीक्षा में सम्मिलित होने से वंचित हो सकता है। अत: नियमित कक्षाओं नें उपस्थिति आवश्यक है।
4. कॉलेज परिसर में निरूदेश्य धूमना साइकिल मोटर साइकिल चलाना अनुशासनहीनता है। अत: खाली समय में कॉमनहॉल अथवा पुस्तकालय का सदुपयोग करें।
5. पश्चिय-पत्र सदैव साथ रखें। कभी भी प्राक्टोरियल-बोर्ड द्वारा इसकी जाँच की जा सकती है। गैर प्रशिक्ष शिक्षक का बिना कारण परिसर अथवा बरामदे में टहलना अनुचित है। उस पर सदत कार्यवाई की जाएगी।
6. कॉलेज की सम्पति को हानि पहुँचाने पर अर्थदंड़ देय होगा। विशेष स्थिति में कॉलेज से निष्कासित भी किया जा सकता है।
7. कॉलेज के खिलाड़ियों को किसी भी स्थिति में अन्य क्रीडा-क्लबों का सदस्य बनने की अनुमति नहीं है।
8. कॉलेज में अथवा कॉलेज से बाहर सभी प्रशिक्षु शिक्षक के अपेक्षा की जाती है कि वे शिष्टाचार एवं अनुशासन का पालन करेगे।
9. सभी प्रशिक्षु शिक्षक को संबंधित वर्गों अथवा कॉलेज की आंतरिक। बाह्य वार्षिक परीक्षा में सम्मिलित होना अनिवार्य है। अनुपस्थित प्रशिक्षु शिक्षक को /विश्वविद्यालय की परीक्षा से बंचित किया जा सकेगा।
10. प्रशिक्षु शिक्षक के पठन-पाठन एवं पाठ्येतर गतिविधियों की सूचना अभिभावकों को समय-समय पर प्रेषित की जाती है। अत: कक्षा एवं परिसर में अनुशासन बनाये रखना प्रशिक्षु शिक्षक का दायित्व है।
11. प्रशिक्षु शिक्षक को चेतावनी दी जाती है। कि ऐसा आचरण कभीं न करें जिससे कॉलेज की गरिया प्रभावित हो।

पुस्तकालय एवं वाचनालय

कॉलेज का पुस्तकालय समृद्ध है। प्रशिक्षु शिक्षक को पुस्तकालय में पढ़ने और पुस्तकें प्राप्त करने की उत्तम सुविधा है।

वातायनों से युक्त, सुसज्जित वाचनालय है। जिसमें प्राध्यापक एवं प्रशिक्षु शिक्षक अध्ययन करते है। यह विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा अनुदानित है। परिचय-पत्र सह पुस्तकालय कार्ड के आधार पर नियमानुसार पुस्तकें आवंटित की जाती है। सूच्य है। कि समय पर पुस्तकें वापस नहीं करने, क्षति अथवा खो जाने की स्थिति में विहित अर्थदण्ड देय होता है। वाचनालय में शांति बनाये रखना पाठकों को दायित्व है। चर्चा बहस अथवा शोर नितान्त वर्जित है।

खेल-कूद महोत्सव

महाविद्यालय कॉलेज, विश्वविद्यालय एवं राज्य स्तर पर खेल-कूद प्रतियोगिताओं को आयोजन निश्चित है। इसके विशाल खेल परिसर में राष्ट्रीय स्तर के खेल-कूद कार्यक्रमों का आयोजन निश्चित है।

इनके अतिरिक्त महाविद्यालय का प्रतिवर्ष अपना वार्षिकोत्सव आयोजन निश्चित है। कॉलेज की छात्र/छात्राएँ कॉलेज की सांस्कृतिक गतिविधियों के अतिरिक्त खेल-कूद आदि कार्यक्रमों में विशेष अभिरुचि से भाग ले सकते हैं।

मौलाना मजरूल हक अरबी फारसी विश्वविद्यालय, पटना स्टेडियम में ही प्राय: आयोजन निश्चित है।

शिक्षण-शुल्क संरचना

एम. एड.	:	1,50,000.00 रुपये
बी. एड.	:	1,50,000.00 रुपये
डी. एल. एड.	:	1,10,000.00 रुपये

इसके अतिरिक्त परीक्षा व रजिस्ट्रेशन का निर्धारण शुल्क अलग से देना होगा।

नोट : इस शुल्क संरचना में यथा आवश्यकता संशोधन/परिवर्द्धन हेतु माननीय शासी-निकाय की अनुमति आवश्यक है।

अवकाश

अवकाश कॉलेज में शैक्षणिक कैलेण्डर के अनुमान्य है। विशेष परिस्थिति में सक्षम पदाधिकारी का निर्णय मान्य होगा।

आवश्यक निर्देश

विद्यालय में शिक्षक प्रशिक्षण हेतु प्रशिक्षु शिक्षको को 90% उपसिंथत अनिवार्य है। एवं नियमित कक्षा के दौरान 80% उपस्थिति अनिवार्य है। अन्यथा विश्वविद्यालय की वार्षिक परीक्षा से वंचित कर दिये जायेंगें।

नोट : कॉलेज में पूरे वर्ष में कुल 220 कार्य दिवस है।

कॉलेज की सुविधायें

1. स्मार्ट हाईटेक क्लासेज, प्रोजेक्टर के माध्यम से इन्टरनेट द्वारा पढ़ाई की व्यवस्था।
2. सम्पूर्ण परिसर वाई - फाई ब्रॉड बैण्ड युक्त
3. समृद्ध लाईब्रेरी, वाचनालय, प्रयोगशालाएँ, योग्यता, काउन्सलिंग एवं रोजगार नियोजन केन्द्र की व्यवस्था।
4. शांति निकेतन-सा वातावरण।
5. विश्वविद्यालय का सबसे समृद्ध कॉलेज तथा खेल-कूद का मैदान। 200 मीटर का 8 लेन का ट्रैक।
6. छात्रावास प्रस्तावित।
7. डी. एल. एड्., बी. एड्., एम. एड्. जैसे कोर्स की सुविधा।
8. छात्रों के लिए महाविद्यालय बस की सुविधा।
9. कम्प्यूटर से सुसज्जित लैब व इन्टरनेट से आच्छादित परिसर।
10. शैक्षणिक परिभ्रमण, गीत, संगीत, वाद-विवाद, सांस्कृतिक कार्यक्रम के माध्यम से स्किल डेवलपमेंट।
11. कठोर अनुशासन हेतु ड्रेस कोड, सी. सी. टी. वी. कैमरा द्वारा 24 घंटे निगरानी।
12. योग्य अनुभवी नेट, पी- एच. डी. प्राप्त शिक्षकों द्वारा अध्यापन।
13. 100 प्रतिशत परीक्षाफल देने का प्रयास।
14. एन. सी. सी. सर्टिफिकेट के लिए बालक एवं बालिका की अलग-अलग यूनिट प्रस्तावित।
15. एन. एस. एस. की दो ईकाई प्रस्तावित।
16. 24 घंटे विद्युत आपूर्ति के लिए बड़े जेनरेटरों की व्यवस्था और साथ ही कैंटीन तथा पर्सनालिटी डेवलपमेंट ट्रेनिंग।
17. पेय जल की व्यवस्था।
18. नि: शुल्क रेमेडियल क्लासेज ताकि बच्चे बेहतर हो सकें।

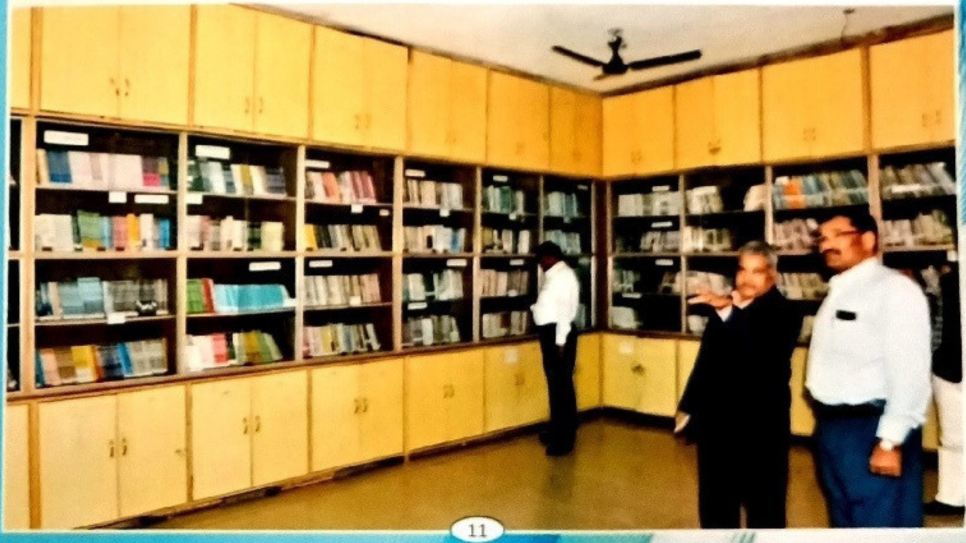

BABA HEERA SINGH DEEPA SINGH JEE TEACHERS TRAINING COLLEGE